कल्याणी झा कनक

ई-मेल:jhakalyani1965@gmail.com

रपट

सांझ होते ही सभी बच्चे घर की तरफ जाने लगे। मुनिया कहीं दिखाई नहीं दी। घर पर भी नहीं थी। पूरे गाँव में शोर मच गया। धीरे-धीरे रात हो चली थी। अभी तक उसकी कोई खबर नहीं थी। तभी एक झाड़ी से कराहने की आवाज सुनाई दी। लोगों ने जाकर देखा तो मुनिया बेसुध पड़ी थी। पूरा शरीर लहूलूहान था। माँ ने चीखते हुए उसे गोद में लिया, और अस्पताल की तरफ भागी। नर्स ने आकर कहा, "शंकर का नाम ले रही है।"

पूरा गाँव शंकर के घर के बाहर खड़ा था। शंकर की माँ (शीला) भीड़ को चीरती हुई सीधे थाने पहुँची। वहाँ पहले से ही शंकर के पिता एक वकील के साथ बैठे थे।

शीला ने थानेदार की तरफ देखते हुए कहा, "साहब, मेरे बेटे ने जघन्य अपराध किया है। उसकी रपट लिखिए।" फिर अपने पति को धिक्कारते हुए बोली, "हमारी बेटी और मुनिया एक ही कक्षा में पढ़ती हैं। तुम्हें मुनिया में अपनी बेटी नजर नहीं आई?" उसके बाद वकील को निशाना बनाते हुए, "वकील बाबू, क्या इन दरिंदों को बचाने के लिए ही आपने वकालत की डिग्री ली थी?"

समाज सेविका

रजनी महिलाओं के लिए एक संस्था चलाती है। जहाँ जरूरतमंद महिलाएँ अपने हुनर के हिसाब से कई तरह के छोटे-छोटे कार्य के जरिए पैसे कमाती है। दीपावली का त्योहार नजदीक आने के कारण सभी की व्यस्तता बढ़ी हुई थी।

दुकानदार ने रजनी से सवाल करते हुए कहा, "आपने दो तरह के दाम क्यों रखे है?"

रजनी ने समझाते हुए कहा, "कुछ थैले नए कपड़ों के है, जो सहयोग राशि से कपड़े खरीदकर बनाए गए है। कुछ पुराने कपड़ों के है। मेरी संस्था में काम करने वाली कई औरतें सम्पन्न घरों में खाना भी बनाती है। वहाँ उन्हें पुराने और टिकाऊ चादर, जींस, शर्ट इत्यादि मिल जाते हैं।"

"ये तो बहुत अच्छी बात है।"

"आप भी चाहें तो किसी भी तरह से हमारी मदद कर सकते हैं।"

दुकानदार ने झट से कहा, "क्यों नहीं, हम भी आप के साथ थोड़ा पुण्य कमा लेंगे।"

"नहीं, सेठ जी, पुण्य ही नहीं, आप दो तरह से समाज की मदद करेंगे। एक, पालिथिन दूर भगाने में आपकी सहभागिता होगी। दूसरा, गरीब महिलाओं और बच्चों के यहाँ कुछ पैसे आ जायेंगे। तो उनके यहाँ भी त्यौहारों की धूम होगी।"